जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(शुभारंभ : १५-८-१९६९) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३, २४२१७८५०

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७,सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४६ वा ❖ अंक ११ वा ❖ जुलै २०१५ ❖ वीर संवत २५४१ ❖ विक्रम संवत २०७१

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● महामंत्र की साधना	१५	● संम्पादन कला	८१
● विधवा एवं जरुरतमंद महिलाओं को सहयोग	२०	● मृत्यु को महोत्सव बनाएँ, मौत पर विजय	८५
● भारत सरकार द्वारा जैन अल्पसंख्याक विद्यार्थियों को मिलनेवाले लाभ	२१	● स्थितप्रज्ञ बनो	८६
● श्वेताम्बर जैन समाज के छात्र-छात्राओंको छात्रवृत्ती	२३	● चातुर्मास - आत्मजागृतीचा महायज्ञ	८९
● कव्हर तपशील	२४	● संपूर्ण शास्त्र की सारभूत ९ बातें	९०
● कोई मुझे देख रहा है	२५	● जबकि	९१
● महावीर गाथा	३३	● पावसाचे गाणे अन् गाण्यातला पाऊस	९३
● जैन संम्प्रदायों में संगठन का आधार क्या है ?	५३	● हास्य जागृति	९५
● क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद	५९	● इष्ट रो सुमिरण कर	९७
● जब जागें, तभी सवेरा	६५	● उमर का हिसाब	९८
● छंद	६९	● शिका आणि पुढे सरका	९८
● गोल्डन डायरी	७०	● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	९९
		● जिनशासन जयवंत हो, सांप्रदायिकता का अंत हो	१०५

- श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. गणाधीश १०७
- अच्छे कामों को खुलकर सराहे, बुराई अपने आप कम होने लगेगी १०९
- पुणे कॅम्प मर्चन्ट असोसिएशन ११०
- एशियन आय हॉस्पिटल, पुणे १११
- जय आनंद ग्रुप, पुणे ११३
- वीतराग सेवा संघ, पुणे ११३
- सिध्दी फाऊंडेशन, पुणे – रक्तदान ११६
- वीरायतन कच्छ में समोसरण का भव्य शिलान्यास १२९
- संघपती संमेलन, मुंबई १३२
- मुक्ति का द्वार – मानव जीवन १३९
- बडे बुजुर्गों के चरण स्पर्श क्यों करें? १४०
- कळत पण वळत नाही १४१
- कडवे प्रवचन १४१
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकिय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन विशेषांकासहित

❖ पंचवार्षिक वर्गणी –१५५० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी – ९५० रु. ❖ वार्षिक वर्गणी – ३५० रु.

(बाहेरगावच्या चेकला १०० रु. जास्त) ❖ या अंकाची किंमत ३० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/on line/RTGS/AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्राफ्टने/'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कातीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

'जैन जागृति' – वर्गणी बँकेत भरू शकता

जैन जागृति मासिकाची वर्गणी रोखीने, मनीऑर्डरने, पुणे चेक, ॲट पार चेक, ड्राफ्टने पाठवावी किंवा **'भारतीय स्टेट बँक'** मध्ये जैन जागृति खात्यात वर्गणी भरू शकता. बँकेच्या पे स्लीपवर **'जैन जागृति'** लिहावे. बँकेचा तपशील पुढीलप्रमाणे

STATE BANK OF INDIA Branch - Market Yard, Pune.
Current A/c No. : 10521020146 IFS Code : SBIN0006117

आपण जर वर्गणी बँकेत भरली तर वर्गणी भरल्यानंतर पे स्लीपची झेरॉक्स बरोबर आपला ग्राहक क्रमांक, पूर्ण नाव, पत्ता, मोबाईल नंबर ऑफीस मध्ये पाठवावे अथवा बँकेची स्लीप स्कॅन करून E-mail : jainjagruti1969@gmail.com वर पाठवावी. ई–मेलमध्ये ग्राहक क्र., पूर्ण नाव, पत्ता, फोन, मोबाईल नंबर द्यावा म्हणजे आपल्या नावाने वर्गणी जमा केली जाईल.

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

पंचवार्षिक	१५५०/– रु.	त्रिवार्षिक	९५०/– रु.	वार्षिक	३५०/– रु.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३, **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१ www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- **पुणे शहर ❖ जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- **पुणे शहर –** श्री. अभिजीत डुंगरवाल, ९४२३२३४१६०
- **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५, ९९२२१११९६७
- **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- **खडकी, पुणे –** श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- **सासवड, हडपसर, पुणे –** श्री. राजेश प्रदीपजी कुवाड, मो. ९०२८५६६९७२
- **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
- **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
- **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१
- **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- **मुंबई** खारघर– श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
- **धनसोली, नवी मुंबई –** श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८८६८५
- **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- **बीड –** श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- **श्रीरामपूर –**श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- **लासलगाव –** श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
- **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- **अंमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- **कुर्डुवाडी, जि. सोलापूर–** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ९९६०००००२५
- **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२५४२२५३
- **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

महामंत्र की साधना

लेखक : पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकर विजयजी गणिवर्य
हिन्दी अनुवाद : आचार्य श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. (क्रमश:)

१३९. प्रेम की अभिलाषा

अहिंसा क्या है? आत्मा को जान लेना ही अहिंसा है। मैं स्वयं को जानने में समर्थ हो जाऊँ तो उसीके साथ सबमें जिसका वास होता है, उसे भी जान सकूँगा। इस भावना में से प्रेम प्रकट होता है और प्रेम के लिए किसी को दुख दिया जाए यह असंभव है। किसी को भी दुख देने की असंभावना ही अहिंसा है।

आत्म-अज्ञान का केन्द्रीय लक्षण 'अहं' है। आत्मज्ञान का केन्द्रीय लक्षण 'प्रेम' है।

जहाँ 'अहं' शून्य होता है, वहाँ प्रेम पूर्ण बनता है। अहं संकीर्ण है तो प्रेम विराट है। अहं अणुस्थित है तो प्रेम विशाल है।

अहं का केन्द्र व्यक्ति है तो प्रेम का केंद्र समष्टि है। अहं अपने लिए जीता है तो प्रेम सबके लिए जीता है। अहं शोषण है, तो प्रेम सेवा है। प्रेम में से सहजता से प्रवाहित होनेवाली सेवा ही अहिंसा है।

प्रज्ञा का साधन समाधि है। मतलब यह है कि प्रज्ञा साध्य है, समाधि साधन है। प्रेम सिध्दि का परिणाम है।

प्रेम कैसे प्राप्त किया जाए? प्रेम सीधी तरह से नहीं मिलता है। वह तो परिणाम है। प्रज्ञा को प्राप्त किया जाए तो उसके परिश्रम की पूर्ति में प्रेम मिल जाता है।

प्रज्ञा है, लेकिन प्रेम नहीं है, यह संभव नहीं है। ज्ञान होगा, वहाँ अहिंसा नहीं होगी, यह कैसे हो सकता है।

इसलिए अहिंसा को सच्चे प्रेम की कसौटी माना गया है। इसलिए अहिंसा परम धर्म है, परम प्रेम है, क्योंकि वह आत्यंतिक कसौटी है। इस कसौटी पर जो सच्चा उतरता है वही सच्चा धर्म होता है।

प्रज्ञा कैसे प्राप्त की जाए? हममें जो ज्ञानशक्ति है वह विषयमुक्त बन जाए तो वह प्रज्ञा बन जाती है। विषय के अभाव में ज्ञान स्वयं को ही जानता है।

अपने द्वारा अपना ज्ञान यही प्रज्ञा है। इस ज्ञान में न कोई ज्ञाता है, न कोई ज्ञेय है। सिर्फ ज्ञान की शुध्द शक्ति ही होती है। स्वयं से स्वयं का प्रकाशित होना प्रज्ञा है।

ज्ञान का स्वयं पर से पीछे लौटना मान व चेतना की सबसे बड़ी क्रांति है। इस क्रांति से ही मनुष्य अपने से संबध्द हो जाता है। जीवन का प्रयोजन तथा जीवन की अर्थपूर्णता उसके समान उद्‌घाटित होती है।

प्रेम के अभाव में मनुष्य अपने में ही मग्न हो जाता है। 'पर' के साथ उसका कोई 'सेतु' (संबध) नहीं रहता है। यह क्रमिक मृत्यु है। जीवन तो पारस्परिकता है। जीवन संबंधों में होता है।

मनुष्य के मन में जब आनंद का जन्म होता है, तब उसके मन में सबके प्रति प्रेम का भाव जन्म लेता है। मूल प्रश्न आनंद की अनुभूति का है। अंत:करण में आनंद हो तो आत्मानुभूति से प्रेम उत्पन्न होता है।

आत्यंतिक अस्तित्व से अपरिचित होता है, वह कभी आनंद प्राप्त नहीं कर सकता है। 'स्वरूप' में प्रतिष्ठा ही आनंद है। इसलिए अपने आपको जानना यह नैतिक और शुभ होने का मार्ग है।

प्रेम, राग (मोह, आकर्षण, आसक्ति) नहीं है। राग में प्रेम का अभाव है। यह घृणा से विपरीत भाव है। राग और घृणा की जोड़ी है। राग किसी भी समय घृणा में परिवर्तित हो सकता है।

प्रेम, राग और घृणा से अलग वस्तु है। वह उपेक्षा भी नहीं है। उपेक्षा सिर्फ अभाव है। प्रेम एक अत्यंत अभिनव शक्ति का सद्भाव है। यह शक्ति अपने से सबकी ओर बहती है। सबसे आकर्षित होकर नहीं, बल्कि अपने में से स्फुरित होकर बहती है।

प्रेम जब संबंध में सीमित होता है, तब वह राग है। वह असंबंध में है तो वह अहिंसा है। असंबंध, असंग, स्वयं स्फुरित इन सबका अर्थ एक ही है।

जो गिराता है, वह प्रेम नहीं है, वह राग है। जो तारता है, रक्षा करता है, वह प्रेम है। प्रेम में गिरना होता ही नहीं है, सिर्फ चढ़ना होता है। आत्मा आत्मा को पहिचाने, उसका स्वागत करे और अपनाकर आलिंगन करे, यह प्रेम की प्रक्रिया है। प्रेम की परिधि लोकव्यापी होती है। जब तक किसी एक भी जीव के प्रति द्वेष हृदय में हो, तब तक प्रेम पूरी तरह से विकसित हुआ नहीं माना जा सकता है। इसका कारण यह है कि प्रेम में द्वेष को स्थान नहीं होता है, इसलिए प्रभुप्रेम सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। वही साध्य है, वही तारक है। वीतराग परमात्मा विश्व के प्रति वात्सल्य से युक्त हैं। उनकी भक्ति से हम भी सच्चे प्रेम के पात्र बन सकते हैं।

१४०. 'शिव' शुभ संकल्प

आपका आनंद आप पर ही निर्भर होता है, अन्य किसी पर नहीं।

आत्ममंथन और आत्मसंशोधन से मनुष्य समझता है कि वह स्वयं कौन है, कैसा है? इसी के साथ वह अपनी कमियों और खूबियों को भी देख और जान सकता है।

जीव स्वयं ब्रह्म है, लेकिन वह यह बात नहीं मानता है, इसलिए वह तुच्छ बना रहता है। कर्मबध्द जीव स्वयं तुच्छ होता है, फिर भी वह स्वयं को ऐसा, तुच्छ नहीं मानता है। इसलिए वह अभिमान में रहता है।

मन में बँधी हुई कल्पना या संकल्प कितना बलवान और सामर्थ्यशाली है, यह इस पर से आसानी से समझा जाता है।

मन को जागरूकता, दृढ़ता आदि संस्कारों से वासित करने से वह वैसा बनने लगता है। इसका अर्थ यह है कि अच्छे संस्कारों का बल बढ़ने पर अशुभ या बुरे संस्कार हट जाते हैं और मन शुभ संकल्प को मानने लगता है। ऐसा करते-करते उन्नति साध्य होती है। अंत:करण शुध्द होने से शक्ति और सूक्ष्मता प्राप्त होती है।

मानव -जन्म नर में से नारायण बनने के लिए होता है। सच्चा सुख मानव के हृदय में जो ईश्वरीय तत्त्वरूप ईश्वर बैठा है, उसके साथ मिलन से ही अनुभव किया जा सकता है।

सच्चिदानंद स्वरूप परमात्म चैतन्य का आनंदमय और पूर्णतायुक्त संकल्प साध्य होनेपर अन्य चीजें तुच्छ लगती हैं। तीनों लोक का राज्य भी रूखा-सूखा-फीका जान पड़ता है। अतींद्रिय तत्त्व का आनंद सिर्फ आत्मा में से ही आत्मा को प्राप्त होने के बाद इंद्रियाँ बेकार सिध्द होती है।

१४१. परोपकार की प्रधानता

मनुष्य को यह शरीर परोपकार के लिए मिला है। शक्ति और संयोग होने पर भी परोपकार के बिना जीनेवाला मनुष्य महापापी होता है। मनुष्य जीवन की सच्ची सफलता परोपकार के रंग में रंगने में है। अन्य प्राणी अनिच्छा से परोपकार करते हैं। किसी भी स्थिति या संयोग में परोपकार मरना मनुष्य का प्रमुख कार्य है।

प्रत्येक जीव दूसरों के उपकार में सहायता करने के लिए बँधा हुआ है। यदि वह ऐसी सहायता न करे, तो वह विश्वविधान का अपराधी सिध्द होता है। वह विधान बतानेवाले से द्रोह करता है। इसका बुरा परिणाम उसे भुगतना पड़ता है। इससे बचने के लिए परोपकार के प्रबल नियम के अधीन रहना चाहिए।

परोपकार की पध्दति पशु की तुलना में मनुष्य की और सामान्य मनुष्य की तुलना में साधुमुनियों की और

संसारी मनुष्य की तुलना में योगियों की भिन्न-भिन्न होती है। उसके क्रम का भी भंग नहीं होना चाहिए। अन्यथा वह उपकरण के स्थान पर अधिकरण बनता है। छोटे बच्चे पर उपकार करने के लिए माँ के दूध के स्थान पर अन्न दिया जाए तो वह उपकार नहीं होगा। उसी प्रकार से गृहस्थ का कार्य साधु और साधु का कार्य गृहस्थ करे तो अनर्थ हो जाएगा। धनवान मनुष्य धन से, बलवान मनुष्य बल से और बुध्दिर के लिए सब के पास एक ही प्रकार का साधन होना असंभव है।

पाँचवें गुणस्थानक तक तो परोपकार में वस्तु की प्रधानता है, तो छठे गुणस्थानक से अध्यवसाय और भाव की प्रधानता है। साधु अपने जीवन से प्रजा को सन्मार्ग पर लगा कर सदाचारी बन सकता है। साधुपुरुषों की देह परोपकार की पिंड और अहिंसा की अवतार मानी जाती है।

सिध्दावस्था में सिध्दात्मा स्वभाव से ही सर्वोदयकारक होती है। सिध्दात्मा के परोपकार की प्रक्रिया से अलग रहनेवाला न मनुष्य है, न मुनि है, न ही महेश्वर है। सिध्दावस्था में परोपकार सूरज और चंद्रमा के उपकार के समान सहज है।

त्याग एको गुण: श्लाघ्य: किमन्यैर्गुणराशिभि: ।
त्यागाज्जगति पूज्यन्ते नूनं वारिदपादपा:।।

अर्थात् त्याग नाम का गुण प्रशंसनीय है। यदि यह गुण गल जाए तो फिर अन्य गुण हो तो क्या और न हो तो क्या? त्याग के कारण से ही इस जगत् में बादल और वृक्ष पूजे जाते हैं।

दानवृत्ति का मूल त्यागवृत्ति है। त्यागवृत्ति के मूल में कृतज्ञता भाव होता है। कृतज्ञताभाव का मूल परोपकार का स्वभाव है। परोपकार की बुनियाद प ही पूरे ब्रह्मांड की रचना हुई है । सिध्दात्माएँ निगोद के जीवों पर अकारण उपकार करती हैं और श्री अरिहंत परमात्मा विश्व के सभी जीवों का उध्दार करते हैं। आचार्यादि भी अपने आचार, ज्ञान और साधना के द्वारा विश्व के प्राणियों पर अलौकिक उपकार करते हैं ।

सारा विश्व परोपकार में प्रवृत्त है । ऐसा माननेवाला व्यक्ति नम्र बनता है, कृतज्ञ बनता है, त्याग और दान को अपना परम धर्म समझता है । इस धर्म का आचरण न हो तो उसे उलझन का अनुभव होता है और जब आचरण होता है तो वह प्रसन्नता का अनुभव करता है।

१४२. प्रभु आज्ञा के दो प्रकार

प्रभु की आज्ञा जिन दो पदों में समा जाती है, उनमें से एक है आस्रव को छोडना और दूसरा है संवर का आदर करना 'आस्रव: सर्वथा हेय उपादेयश्च संवर:।'

आस्रव त्याज्य है और संवर उपादेय है । इसलिए प्रभु की आज्ञा निश्चल है, सुप्रतिष्ठित है । जीवलोक के लिए हितकर है । परपीडा आस्रव है तो परोपकर संवर है । इसलिए प्रभु की आज्ञा सभी जीवलोकों के लिए सुखकारक है ।

परोपकार, परपीडा से होनेवाले आस्रव को रोकता है । इसलिए वह संवररूप है । परपीडा परोपकार के विपरीत होने से आस्रव है ।

सभी प्रकार के प्रयत्नों से आस्रव छोडने योग्य है, तो संवर अपनाने योग्य है । इसलिए जिन्होंने आस्रवों को त्याग दिया ह और जो सर्व संवर स्वरूप बने हैं, उन्हीं की शरण में जाना योग्य है । उन्हीं का ध्यान करना उचित है । वेही वंदन-पूजन-आराधना करने योग्य हे और उन्हीं की आज्ञा शिरसावंद्या मानने क लिए उचित है।

१४३. सम्यक्त्व का स्वरूप

संसार हेय है, क्योंकि वह परपीडास्वरूप है । मोक्ष उपादेय है । उपयुक्त है, क्योंकि वह परोपकारस्वरूप है। संसार परपीडास्वरूप है, इसलिए वह पापरूप है और पाप के फलस्वरूप ही है । मोक्ष परोपकारस्तरूप है, इसलिए पवित्र है और पवित्र धर्माराधना के परिणामस्वरुप है ।

संसार में 'मत्स्य गलागल' न्याय चल रहा है ।

उनमें से छूटने की बुध्दि और मोक्ष ये जीव के लिए आलंबन रूप होते हैं । इसलिए उन्हें पाने की बुध्दि सम्यक् बुध्दि है । चही सच्ची समझ है । इसके विपरीत समझ संसार में भटकानेवाली है ।

'परोपकार के कारण मोक्ष उपादेय है और परपीडा के कारण संसार हेय है, ऐसा ज्ञान होना सम्यग्ज्ञान है । ऐसी श्रध्दा होना सम्यग्दर्शन है और ऐसा आचरण होना सम्यक् चारित्र है ।

मोक्ष में गए हुए या मोक्ष जाने के लिए प्रयत्नशील होनेवाले जीवों की शरण स्वीकार करना, उनके प्रति होनेवाली प्रीति और भक्ति को बढाना आृरा उनकी आज्ञा के पालन को ही एकमात्र कर्तव्य मानना यह सम्यक्त्व का स्वरूप है ।

१४४. शरण यानी क्या ?

शरण शब्द आश्रय, आधार, आलंबन, सहारा आदि एक ही अर्थ को बतानेवाला है । श्री पंच परमेष्ठी भगवंतों की शरण, उनके स्मरण, आश्रय, आधार, आलंबन, सहारे से ली जाती है । श्री पंच परमेष्ठी भगवंतों की शरण यह धर्म की ही शरण है ।

धर्म परोपकारस्वरूप और परपीडा के परिहाररूप है। इसलिए जो धर्म की शरण स्वीकार करता है, वह तत्तवत: परोपकार की शरण में जाता है । पररोपकार इस जगत् में तरने का उपाय है । उसी की शरण लेना योग्य है, वही जीवन में अपनाने योग्य है ।

सच्चा उपकार मोक्षमार्ग प्राप्त करने और प्राप्त कराने में है । मोक्षमार्ग रत्नत्रयीरूप ह्न । रत्नत्रयी ज्ञज्ञन, दर्शन और चारित्ररूप है । ज्ञान-दर्शन चारित्र आत्मा के मूल गुण हैं ।

सभी जीवों को समान रूप में जानने, देखने और उनसे बर्ताव करने से ज्ञान, दर्शन, चारित्र ये तीनों गुण चारितार्थ होते हैं । इन तीन गुणों की आराधना जीव को केवलज्ञान, केवलदर्शन और पूर्ण चारित्र का निर्बाध सुख देती है ।

१४५. मुक्ति का सच्चा उपाय

परोपकार : पुण्याय, पापाय परपीडनम् । दूसरों पर उपकार पुण्य के लिए होता है ।

दूसरों को पीड़ा पाप के लिए होती है।

पुण्य से सुख मिलता है, तो पाप से दुख। इसलिए सुख पाने के इच्छुक जीव को परोपकार करना चाहिए और परपीड़ा का परिहार करना चाहिए। यदि परपीड़ा का परिहार पाप से मुक्त होने का उपाय है, तो पुण्यप्राप्ति का उपाय उससे विपरीत दूसरों पर उपकार करना ही हो सकता है। उपकार भी नहीं करना और पीड़ा भी न देना ऐसी तीसरी अवस्था संभव नहीं है, क्योंकि दूसरे की पीड़ा या दूसरे पर उपकार ये दो ही अवस्थाएँ होती हैं। इसलिए सुख का मूल धर्म परोपकार स्वरूप होता है।

सुकृत का अनुमोदन करने में धर्म का अनुमोदन है। धर्म सुकृत है और सुकृत परोपकार का ही दुसरा नाम है। दुष्कृत ही गर्हा और निंदा, पाप की निंदा है। पर पीड़ा पाप है और पाप दुख का मूल है। इसलिए परपीड़ा की निंदा और परोपकार की अनुमोदना कर श्री पंचपरमेष्ठि भगवंतो की शरण लेनी चाहिए। उनके ध्यान में तल्लीन होना ही मुक्ति का उपाय है।

१४६. धर्म मात्र का मूल-नम्रता

नमस्कार, यह हमारा आदर्श है। निर्भयता, यह हमारा अधिकार है।

धर्म पाने की पहली सीढ़ी नम्र होना है। जो नम्र नहीं बन सकता है, वह धर्म को पहिचान नहीं सकता है।

धर्म को पहिचानने के लिए कर्म को जानना चाहिए। जो कर्म को जानता है, वह नम्र बनता है।

नम्र बनकर जो संयमी बनता है, वह नए आनेवाले कर्म को रोकता है और पुराने कर्म को तितर-बितर कर देने के लिए तप करने को उल्लसित होता है। धर्म करके

भी जो गर्व करता है, वह धर्म का आभास मात्र है, क्योंकि धर्म का मूल नम्रता-वंदना है।

धर्म प्रति मूलभूता वंदना !

सत्यधर्म की प्राप्ति अर्थात्

नम्रता यह प्रकाशक ज्ञान है।

उसमें से फली भूत होनेवाला संयम नए कर्म को रोकता है और पुराने कर्म को निकाल देता है।

प्रकाशक ज्ञान के बिना कर्म मैल को निकालने या उसे रोकने की वृत्ति होती ही नहीं है।

कर्म के स्वरुप का ज्ञान होते ही जीव नम्र बन जाता है। यह नम्रता तब तक टिकती है, जब तक जीव कर्म से सर्वथा मुक्त नहीं हो जाता है। मुक्ति की प्राप्ति के बाद वह अपने आप चली जाती है।

मुक्तिप्राप्ति तक नम्रता उत्पन्न करनेवाला दर्शन, तत्त्वज्ञान न मिले, तो आत्मा कर्म का क्षय करनेवाले तात्त्विक धर्म को पा नहीं सकती है।

सत्यधर्म को पाने के लिए कर्म की सत्ता, उदय और संबंध को जानना चाहिए। यह ज्ञान सर्वज्ञ के वचन से ही दृढ़ होता है।

१४७. विनय

विनय 'नमो' का पर्याय है। 'अष्ट कर्म विनयन' यह विनय की शक्ति है। इसलिए अष्टकर्म के कारणभूत अष्टमदों को समूल नष्ट करने की शक्ति विनय गुण अर्थात् नम्र वृत्ति में है।

मेरी आत्मा कर्म के कारण सबसे नीचे है। यह ज्ञान जिनवचन से होता है। इससे जाति कुलादि कर्मकृत भावों का अभिमान गल जाता है और वह सच्चा नम्र बनता है।

'नाहं न मम' यह मोहराजा के मंत्र का प्रतिस्पर्धक मंत्र उसी को फलीभूत होता है जो समग्र जीवसृष्टि के साथ जातिगत एकता का अनुभव करता है। यह एकता उसे नम्र और निर्भय बनाती है। क्रमश: ●

विधवाओं एवं जरूरतमन्द महिलाओं को सहयोग

श्वेताम्बर ओसवाल जैन समाज की निर्धन, वृद्ध, बेसहारा, अशक्त, विधवा महिलाओं एवं परित्यकता, तलाकशुदा बहनें जो अन्य घरों में मेहनत मजदूरी कर जीवन यापन कर रही हैं और जिनकी मासिक आय रु. ३,०००/- से अधिक नहीं हैं भोजन के लिये आर्थिक सहयोग हेतु इस प्रकार आवेदन करें।

१. आपके कितने पुत्र एवं पुत्रियाँ हैं उनसे तथा आपके पीहर, ससुराल से रिश्तेदार एवं स्थानीय समाज के पदाधिकारी एवं धनाढ्य लोगों से क्या सहयोग मिल रहा है, कृपया जानकारी देवें।

२. आपका जीवन निर्वाह अर्थात् रोटी, कपड़ा मकान है या नहीं, नहीं तो मासिक किराया कितना है...

४. दो लिफाफों (पॉकिट) अपना नाम, मकान मालिक का नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य, पिनकोड मोबाईल, फोन नं. लिखकर भेजें।

५. दोनों लिफाफों में रू. ५-५ के डाक टिकिट रखें, टिकिट लिफाफे पर चिपकायें नहीं।

६. अर्जी पत्र में भी आप अपना नाम, मकान मालिक का नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य, पिनकोड मोबाईल, फोन नं. लिखकर भेजें, सिर्फ लिफाफे पर पता लिखना पर्याप्त नहीं है।

७. मेडिकल सहायता, विकलांग भत्ता, उधार (लोन) आदि देने का प्रावधान नहीं है, सहयोग राशि मात्र भोजन सामग्री के लिए है।

गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट
श्री लाभचन्द कोठारी, एम.ए.
डी - १२०, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड,
बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५-०६,
मोबाईल : ९३१४०-०३५३६

भारत सरकार द्वारा जैन अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को मिलने वाले लाभ

कक्षा १ से लेकर पी.एच.डी. तक के कोर्स या विदेश में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु छात्रवृत्ति, ऋण या फॅलोशिप (पात्रता के अधीन) देने का प्रावधान है, मुख्य योजनायें निम्न हैं:

कक्षा/ कोर्स का नाम	छात्रवृत्ति कुल देय राशि (अधिकतम) वार्षिक		शैक्षणिक वर्ष १५-१६ हेतु घोषित आवेदन की तिथियाँ			पात्रता
	नियमित छात्र	हॉस्टल छात्र	नवीन आवेदन Fresh	नवीनीकरण आवेदन Renewal	आवेदन का प्रकार	
प्री-मेट्रीक स्कोलरशिप						
कक्षा १ से ५	रू.१०००		१मई से ३१जुलाई	१मई से ३१जुलाई	ऑफलाईन	विद्यार्थी के परिवार की कुल वार्षिक आय रु. १ लाख या कम
कक्षा ६ से १०	रू.५०००	रू.१०,०००	१मई से ३१जुलाई	१मई से ३१जुलाई	(कक्षा६ से ८) ऑनलाईन (कक्षा९ से १०)	
पोस्ट मेट्रिक स्कोलरशिप						
कक्षा ११ एवं १२	रू.९३००	रू.१०८००	१जून से १५सितंबर	१जून से १०अक्तूबर	ऑनलाईन	विद्यार्थी के परिवार की कुल वार्षिक आय रु. २ लाख या कम
स्नातक, स्नातक डिप्लोमा आदि सभी कोर्स	रू.६०००	रू.८७००	१जून से १५सितंबर	१जून से १०अक्तूबर	ऑनलाईन	
व्होकेशनल(ITI)कोर्स	रू.१२३००	रू.१३८००				
एम.फिल.व पी.एच.डी.	रू.५५००	रू.१२०००				
मेरिट कम मीन्स स्कोलरशिप						
सभी तकनीकी एवं व्यावसायिक कोर्स	रू.२५०००	रू.३००००	१जून से ३०सितंबर	१जून से १५नवंबर	ऑनलाईन	विद्यार्थी के परिवार की कुल वार्षिक आय रू. २.५ लाख या कम

महत्वपूर्ण: सम्पूर्ण देश में ८४ प्रीमियर संस्थान ऐसे हैं जिनमें अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रवेश व शिक्षण शुल्क की सम्पूर्ण राशी छात्रवृत्ति में देय है । संस्थानों की जानकारी www.minorityaffairs.gov.in पर उपलब्ध है.

छात्रवृत्ति पात्रता के सामान्य नियम

- गत वार्षिक परीक्षा में ५० % या अधिक अंक आवश्यक
- एक परिवार के अधिकतम २ विद्यार्थी एक समय में छात्रवृत्ति प्राप्त कर सकेंगे
- ३०% छात्रवृत्तियाँ विद्यार्थिनियों हेतु आरक्षित
- छात्रवृत्ति की सम्पूर्ण राशी अब सीधे ही विद्यार्थी के बचत बैंक खाते में जमा होगी
- छात्रवृत्ति मिलना प्रारंभ होने पर योजना अवधि या कोर्स के पूर्ण होने की अवाधि तक प्रति वर्ष छात्र पात्रता के अधीन छात्रवृत्ति का अधिकारी
- अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं. सादे कागज पर विद्यार्थी द्वारा स्वघोषणा पर्याप्त
- पारिवारिक आय का प्रमाण पत्र सरकारी सक्षम अधिकारी द्वारा प्राप्त करना आवश्यक
- सभी online आवेदन अब मात्र www.scholorships.gov.in पर Logon कर होंगे.

अन्य योजनाएँ

* उच्च शिक्षण में देश व विदेश में अध्ययन हेतु National Minorities Development & Finance Corporation (NMDFC) की कम व्याज दर की ऋण योजना।
* विदेश में उच्च शिक्षा या पी.एच.डी. करने हेतु 'ब्याज मुक्ति की 'पढो परदेश' योजना।
* फ्री कोचिंग सुविधाओं की अनेक योजनाएँ।
* एम.फिल. व पी.एच.डी. करने वाले प्रत्याशियों को रु. २५००० व २८००० क्रमश: प्रतिमाह की मौलाना आजाद राष्ट्रीय फॅलोशिप योजना।
* ११ वी कक्षा की मेघावी विद्यार्थिनियों हेतु मौलाना आजाद छात्रवृत्ति योजना।

अधिक जानकारी हेतु हमसे पर सम्पर्क करें।

Email : helpminority@bjsindig.org.

भारतीय जैन संगठन, पुणे

(०२०-४१२००६००, ४१२८००११,४१२८००१२/१३)

केंद्र सरकार द्वारा अल्पसंख्यकों के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की अधिक जानकारी के लिए

- **मानव संसाधन विकास मंत्रालय** ww.mhrd.gov.in
- **अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय** www.minorityaffairs.gov.in
- **राष्ट्रीय अल्पसंख्याक शैक्षणिक संस्था आयोग** www.ncmei.gov.in
- **मौलाना आजाद एज्युकेशन फाऊंडेशन** www.maef.nic.in
- **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** www.ugc.ac.in
- **केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड** www.cbse.nic.in
- **नॅशनल माईनोरिटीज डेवलेपमेंट फाइनेंस कॉर्पोरेशन** www.nmdfc.org
- **नॅशनल इस्टिट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग** www.nios.ac.in

की वेबसाईट का अवलोकन करें।

श्वेताम्बर जैन समाज के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति

श्वेताम्बर जैन समाज के आर्थिक रूप से कमजोर, जरूरतमन्द परिवारों के मेधावी, होनहार, प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने ८ वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है। जिनके परिवार की मासिक आय रुपये १०,०००/- से अधिक नहीं है। छात्रवृत्ति के आवेदन पत्र मँगाने के लिये:-

१. इस वर्ष की प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कक्षा की मार्कशीट की एक फोटो कॉपी (झेरॉक्स) भेजें।

२. दो लिफाफों (पॉकीट) पर अपना पूरा नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य एवं पिन कोड, मो./फोन नं. लिखें।

३. दोनों लिफाफों में रु. १०-१० के डाक टिकट रखें, टिकट लिफाफे पर चिपकायें नहीं।

४. आपके आवेदन पत्र (अर्जीपत्र) में आपके परिवार की आय (उत्पन्न) का विवरण विस्तार से लिखें। आप नौकरी करते हैं या व्यापार। व्यापारी बन्धु अपने व्यापार की विस्तार से जानकारी लिखें, गोल मोल भाषा नहीं लिखें।

५. आवेदन पत्र में भी आपका नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य, पिनकोड मोबाईल, फोन नं. अवश्य लिखें, सिर्फ लिफाफे पर लिखना पर्याप्त नहीं है।

६. आप अपना मोबाईल, फोन नं. एवं पिन कोड साफ सुथरे अंकों में अंग्रेजी में लिखें।

सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट
श्री लाभचन्द कोठारी, एम.ए.
डी- १२०, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर,
जयपुर-३०२०१५-०६
मोबाईल. ९३१४०-०३६३७

जैन जागृति - सप्टेंबर २०१५
पर्युषण विशेषांक

कव्हर तपशील, जुलै २०१५

❖ **समोसरण द वर्ल्ड ऑफ हार्मनी – वीरायतन, कच्छ**

वीरायतन कच्छ येथे समोसरण द वर्ल्ड ऑफ हार्मनीचे भव्य शिलान्यास १८ एप्रिल २०१५ रोजी गुजरातचे मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल यांच्या हस्ते संपन्न झाले. सोबत आचार्य श्री चंदनाजी, साध्वी श्री शिल्पाजी, डॉ. कौशिक शाह, वासणभाई अहिर, विनोद चावडा, पंकजभाई मेहता, सुंदरजी शाह आदि मान्यवर.

❖ **सिध्दी फाऊंडेशन – पुणे**

पुणे येथील सिद्धी फाऊंडेशन तर्फे स्व.श्री. मदनलालजी छाजेड यांच्या स्मरणार्थ आदिनाथ जैन स्थानकात भव्य रक्तदान शिबिराचे आयोजन करण्यात आले. यावेळी सुमारे २०१५ रक्तदात्यांनी रक्तदान केले. यावेळी खासदार श्री. दिलीपजी गांधी यांचा सन्मान करताना श्री. मनोजजी छाजेड, श्री. ललीत जैन, डॉ. सौ. प्रीति छाजेड श्री. विजयकांतजी कोठारी, श्री अभिजित डुंगरवाळ, श्री. महेंद्र सुंदेचा, श्री. प्रकाश बोरा, श्री. मुकेश छाजेड इ. मान्यवर.

❖ **श्री. मणिप्रभ सागरजी म.सा. – गणाधीश**

आचार्यदेव श्री जिनकांत सागर सुरीश्वरजी म.सा. यांचे प्रमुख शिष्य पूज्य गुरुदेव श्री मरुधर मणि उपाध्यायप्रवर श्री. मणिप्रभसागरजी म.सा. यांचा सिंधनूर येथे २९ मे २०१५ रोजी खरतरगच्छ चे ८२ वे गणाधिश पद चादर समारोह संपन्न झाला.

❖ Smart kidz play school – **उद्घाटन**

चिंचवड स्टेशन पुणे येथील Smart kidz play school चे उद्घाटन ३१ मे रोजी प्रमुख अतिथी श्री. आझमभाई पानसरे, वैशालीताई काळभोर इ. मान्यवरांच्या हस्ते संपन्न झाले. यावेळी श्री. चांदमलजी लुंकड, सौ. सुशिलाबाई लुंकड, श्रीमती उज्ज्वला रविंद्र लुंकड, श्री. हर्षद लुंकड, सौ. प्रणाली लुंकड आदी लुंकड परिवारांनी पाहुण्याचे स्वागत केले.

❖ **एशियन आय हॉस्पिटल – उद्घाटन**

नेत्रतज्ञ कांकरिया परिवाराच्या पुणे येथील एशियन आय हॉस्पिटलचे उद्घाटन माजी राष्ट्रपती प्रतिभाताई पाटील यांच्या हस्ते २१ जून रोजी भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. यावेळी सोबत डॉ. वर्धमान कांकरिया, डॉ. सौ श्रृतिका कांकरिया, डॉ. प्रकाश कांकरिया, डॉ. सौ. सुधा कांकरिया, डॉ. पॅलिकॅरीस, डॉ. के.एच.संचेती, श्री. अरुणजी फिरोदिया इ.मान्यवर.

❖ **व्यापारी एकता दिन – पुणे**

भाजपा व्यापारी आघाडी पुणे शहराच्या वतीने व्यापारी एकता दिनानिमित्त अकरा व्यापाऱ्यांचा सन्मान केला. पुरस्कृत व्यापाऱ्या सोबत आमदार माधुरीताई मिसाळ, ओमप्रकाशजी राका, दिलीप खैर, नगरसेविका सौ. मनिषा चोरबेले, कार्यक्रमाचे संयोजक श्री. प्रवीण चोरबेले इ. मान्यवर.

❖ **डॉ. अशोक चोपडा, पुणे – सन्मान**

कलकत्ता युनिव्हर्सिटी येथे २५ व्या आंतरराष्ट्रीय ज्योतिष विषयक समारंभात पुण्यातील नॉलेज मॉलचे संस्थापक डॉ. अशोक चोपडा यांना अमेरिकेच्या पश्चिमात्य ज्योतिष विषारद श्रीमती नाओमी यांच्या हस्ते ''संस्था तत्वाचार्य'' ही उपाधी देऊन सन्मानित करण्यात आले.

❖ **क्लासिक उद्योग समुह – पुरस्कार**

गेल्या २६ वर्षापासून डिझाईनिंग व ॲडव्हर्टायझिंग क्षेत्रात अविरत सेवा देणाऱ्या क्लासिक उद्योग समुहाला डिझाईनिंग क्षेत्रातील मानाचा टॅग २०१५ हा पुरस्कार नुकताच बालगंधर्व रंगमंदिर पुणे येथे क्लसिक टिमचे विवेक कुबरे, नेहा खरे यांना प्रसिद्ध कवी रामदास फुटाणे व सचिन आंबेकर यांच्या हस्ते प्रदान करण्यात आला.

जैन सम्प्रदायों में संगठन का आधार क्या हो?

लेखक : डॉ. चंचलमल चोरडिया, जोधपुर

साधना का उद्देश्य :-

साधना क्या है? उसका ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य क्या हो? उसकी प्राथमिकताएँ एवं पात्रता के मूल मापदण्ड क्या हों? मूल सिध्दांत एवं अन्य सिध्दान्तों के पालन में किसको कितना महत्त्व दिया जाय? परिस्थितियों वश कभी दोनों में से एक को प्राथमिकता देनी हो तो किसको देने का विवेक रखा जाये? बाह्य एवं भाव साधना में किसको प्रमुखता दी जावे, जब तक इन प्रश्नो का सद्विवेकपूर्ण समाधान नहीं होता, तब तक साधना में सहायक तत्त्वों का कैसे मूल्यांकन किया जा सकता है?

राग-द्वेष कम कर, समत्व अथवा वीतरागता को प्राप्त करना ही सभी साधकों की साधना का परम लक्ष्य होता है। नर से नारायण बनना एवं आत्मा से परमात्म पद को प्राप्त करना ही साधना का उद्देश्य होता है। कषायों की मन्दता, सरलता एवं अन्तर बाह्य की एक रूपता, प्रमाद की कमी तथा आत्मीय गुणों को प्रकट कर निज स्वभाव में रहना ही साधना की सफलता का मापदण्ड होता है। आश्रवों से बचते हुए, संवर निर्जरा का आलम्बन लेते हुए तनाव मुक्त हो, पूर्व संचित कर्मों का समभाव पूर्वक क्षय करना ही साधना का क्रमिक विकास होता है। जो साधक इन मापदण्डों को स्वीकारते हैं, बाह्य के साथ-साथ भाव साधना में आगे बढते हैं, उनका जीवन दिन-प्रति दिन लक्ष्य की तरफ बढता जाता है, परन्तु जो क्रिया काण्डों, पूर्वाग्रहों का मायावी आचरण करते हैं, उन्हें स्वयं के प्रति भी ईमानदार कैसे कहा जाय? आज प्रत्येक साधक को अपनी साधना का स्वयं लेखा-जोखा करना होगा एवं कम से कम धर्म के नाम पर होनेवाली मायावृत्ति एवं राग-द्वेष की प्रवृत्ति त्यागने का अथवा कम करने का प्रयास करना होगा तब ही हम साधना के क्षेत्र में क्रमिक विकास करते हुए लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

साधना की प्राथमिकताएँ :

आगमों में साधना की विभिन्न पध्दतियों का पात्रता के अनुरूप विस्तृत विवेचन किया गया है। सभी स्तर के साधकों के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन उपलब्ध हैं। आगमवाणी का भाव कौन से संदर्भ में क्या है, उसके पीछे क्या ध्येय अथवा प्रेरणाएँ रही हुई है? कहाँ किसको कितना महत्त्व अथवा प्राथमिकता देना तथा कब किसको गौण करना ताकि मूल सिध्दांतों की सुरक्षा हो सके, साधकों के सद्विवेक एवं चिंतन पर निर्भर करता है। अतः प्रत्येक साधक को साधना की पात्रता के आवश्यक मापदण्डों को स्वीकारना होगा। मूल सिध्दांतों को आचरण में प्राथमिकता देनी होगी। पूर्वाग्रहों से हट आगम की कसौटी पर अपने आचरण को परखना होगा। सही निर्णय पाने के लिए अनेकांतवादी दृष्टिकोण से सद्विवेक पूर्ण चिंतन करना होगा। परन्तु आज हम अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत, अप्रमाद तथा विषय कषाय का त्याग अथवा समभाव का जितना प्रचार-प्रसार करते हैं, जीवन में उतना आचरण प्रायः नहीं कर पाते व्यक्तिगत महत्वकांक्षाओं, सस्ती लोक प्रियता का मोह , परीषहों को सहन करने का असामर्थ्य तथा शास्त्रीय ज्ञान का अभाव होने एवं पूर्वाग्रहों से ग्रसित होने से हम साधना की प्राथमिकताओं का सही निर्धारण नहीं कर पाते। शास्त्रों का विवेचन करते समय शब्दों को अधिक पकडते हैं परन्तु उसके पीछे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की रही भावना को समझने का सम्यक् प्रयास कम करते हैं। कभी-कभी पूर्वाग्रहों के कारण साधना में मूल

सिध्दांतो की अनदेखी कर खुले आम राग द्वेष बढानेवाली प्रवृत्तियों को अहं के कारण प्रोत्साहन देते तनिक भी संकोच नहीं करते। इसी कारण संवत्सरी एवं पर्युषण महापर्व जैसा पावन-प्रसंग राग-द्वेष पोषण का निमित्त बन रहा है। जो हमारी अनेकांतवादी मान्यता को कडी चुनौती है।

आगम वाणी का अलग-अलग विवेचन कर एक ही धर्म के अनुयायी अपनी अपनी मान्यताओं के अनुसार साधना के मापदंड निर्धारित करते हैं जिन्हें हम विभिन्न सम्प्रदायों के रूप में मान्यताएँ दे रहे हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि सभी संप्रदायें अपने आचरण एवं पत्रव्यवहार को आगम के शतप्रतिशत अनुकुल मानते हैं,उसमें अटूट आस्था एवं विश्वास प्रकट करते हैं। सभी शास्त्रों का विवेचन अपनी मान्यतानुसार करने का प्रयास करते हैं व अपने समर्थन में ऐसे-ऐसे शास्त्रीय तर्क प्रस्तुत करते हैं कि अंध श्रध्दालु भ्रमित हो जाते हैं। साधकों एवं आगमों को उसके अनुरूप प्रकाशन भी करवाने का प्रयास करते हैं। जनसाधारण यह नहीं समझ पाता कि कौनसा आगम प्रमाणित है? अनुयायियों का सम्यक् ज्ञान के अभाव में चिंतन सद्विवेकपूर्ण नहीं हो पाता। फलतः श्रध्दालू भक्त अपने गुरूओं का श्रध्दापूर्वक अंधानुकरण करते नहीं हिचकिचाते एवं जिन उचित अथवा अनुचित सिध्दांतों को वे मान्यता देते हैं, अपनी सहज सहमति प्रकट कर देते हैं। मान्यताओं की प्राथमिकताओं का अनेकांत दृष्टिकोण से चिंतन तक नहीं करते एवं कभी-कभी मूल सिध्दांतों पर पडने वाले प्रतिकूल प्रभावों को भी गौण कर देते हैं। इसी कारण आज अधिकांशतः समाज अलग-अलग सम्प्रदायों में विघटित होने के बावजूद अपनी अपनी मान्यताओं में अंतर से प्रायः अनभिज्ञ होता है। अतः हमें स्वीकारना होगा कि सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् चिंतन के अभाव में गुरूओं के प्रति अंधश्रद्धा आज बढती हुई अधिकांश साम्प्रदायिक कट्टरता अथवा धर्म विरूध्द आचरण का प्रमुख कारण होता है।

सम्प्रदायों की उपयोगिता :

विचारों में भेद होना बुरा नहीं हैं। गणधर श्री गौतम एवं केशी श्रमण में भी विचार विमर्श से पूर्व मतभेद थे, स्वयं गौतम स्वामी को श्रमण दीक्षा से पूर्व भगवान् महावीर की मान्यताओं के प्रति संदेह था, परंतु जैसे ही सत्य प्रकट हुआ उन्होंने सभी पूर्वाग्रहों को छोड सत्य को स्वीकारा। पुराने समय में जब कभी नवीन सम्प्रदायों का उद्भव हुआ, उसके पीछे धर्म के मौलिक सिध्दान्तों, मर्यादाओं, नियमों उपनियमों के सुरक्षा की भावना रहती थी। अतः नवीन सम्प्रदाय के प्रेरक अपना जीवन समर्पण करके, अपार परीषहों व विरोध सहने करने बावजूद भी सिध्दांतो के साथ समझौता नहीं करते। उनमें न तो सस्ती लोकप्रियता की भावना ही होती थी और न अपने श्रध्दालुओं की अन्य भक्ति अथवा व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ। इसी कारण ऐसी सम्प्रदायों की उपयोगिता से नकारा नहीं जा सकता, जो साधना की सुरक्षा में मूल सिद्धान्तों की सुरक्षा के लिए अनिवार्य बन गई थी। परंतु आज जिन छोटी-छोटी बातों को लेकर, सम्प्रदायों का विघटन हो रहा है, उनके पीछे सैद्धांतिक आधार कम और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ अधिक प्रतीत होती है, जिससे संगठन की शक्ति का दिनों-दिन ह्रास हो रहा है।

संगठन में ही शक्ति होती है-

आत्म विकास तो व्यक्तिगत एकान्त साधना से भी हो सकता है, परन्तु सामूहिक साधना में संगठन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संगठित समाज ही अधिक विकास कर सकता है। संगठन से धर्म प्रभावना होती है एवं प्रचार-प्रसार सहज व सरलता से होता है। जन-साधारण धर्म के प्रति अधिक प्रेरित होता है। संगठन के अभाव में धर्म दिखावा मात्र रह जाता है एवं जन साधारण उससे दूर हटने लगता है। जनतंत्र के युग में तो संगठन का विशेष प्रभाव पडता है। सरकारी नीतियों के निर्माण में उनकी प्रभावी भूमिका होती है। यदि हम

असंगठित एवं बिखरे हुए हैं तो बाल दीक्षाएँ, संथारे जैसी आगम सम्मत हमारी उचित बात भी नहीं सुनी जाती। इसके विपरीत जो संगठित हैं उनकी सभी बातों को महत्त्व दिया जाता है, भले ही वे हमारे मूल सिद्धातों के विरूध्द ही क्यों न हों? धर्म के नाम पर पशुबलि और कुर्बानी, मांसाहार एवं अण्डों का खुले आम विज्ञापन एवं प्रचार , अवकाश के दिनों कानून के विरूद्ध मांसाहार का विक्रय, काम विकार बढाने वाले दृश्यों का टी. वी., सिनेमा और समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन, समलैंगिक संबंधों को कानूनी संरक्षण, सेक्स शिक्षा को मान्यता जनभावना के विरूद्ध चन्द स्वार्थी संगठित लोंगो के कारण भारत में बढते हुए बूचडखाने, मांसाहार निर्यात में अकल्पनीय वृद्धि आदि उसी का दुष्परिणाम है। देश में बढती हुई हिंसा, बिगडता हुआ आचरण एवं नैतिक पतन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। हमारे सिद्धातों में इनका सम्यक् समाधान होते हुए भी असंगठित होने से हमारी भूमिका मूकदर्शन से अधिक नहीं कही जा सकती। संगठित समाज ही नीतियों के निर्माण एवं क्रियान्वयन में प्रमुख भूमिका निभाता है।

राष्ट्र के विकास में जैन समाज की भूमिका –

भारत की जनसंख्या का मात्र लगभग एक प्रतिशत भाग होने के बावजूद राष्ट्र के विकास में जैन समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आज राष्ट्र में लगभग २४ प्रतिशत आयकर अकेला जैन समाज देता है। विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं को दान के रूप में प्राप्त राशि लगभग ६२ प्रतिशत भाग जैन समाज द्वारा प्राप्त होता है। १६००० गौशालाओं में से लगभग १२००० गौशालाओं के संचालन में जैन समाज की प्रमुख भूमिका है। लगभग ५० हजार धार्मिक स्थल, ४६ प्रतिशत शेयर ब्रोकर जैन हैं। भारत के विकास दर में लगभग २५ प्रतिशत भागीदारी जैन समाज की है।

जो प्रचार-प्रसार हम संघठित होकर सहज कर सकते हैं, उसका शतांश भी हम असंगठित रूप में नहीं कर सकते। वर्तमान में साधक समाज पर होने वाले प्राण घातक हमलों तथा भ्रामक प्रचार को संगठित होकर ही रोका जा सकता हैं। संगठन से शक्ति कई गुणा बढ जाती है। अतः छोटी-छोटी मान्यताओं में मतभेदी को लेकर नए-नए सम्प्रदायों का गठन धर्म के लिए, घातक है और जो धर्म के लिए घातक है वह साधना के लिए कैसे उपयोगी सिध्द हो सकता है?

संगठन का स्वरूप क्या हो?

जो संगठन में रहकर अपने स्वतन्त्र अस्तित्व का दावा करते हैं, नियम मर्यादाओं का पालन नहीं करते, नियमित जीवन में प्रमाद को बढावा दें अपने लक्ष्य से भ्रमित हो रहे हैं, संगठन का आलम्बन अपनी कमजोरियों को छिपाने में करते हैं, संघ-संचालक इन सबको जानते हुए अनजान बने हुए हैं अथवा साधकों का सही मार्गदर्शन करने में असमर्थ हैं। ''जैसे चल रहा है - चलने दें'' की स्थिति को प्रोत्साहन दे रहे हैं वे भी अपने उत्तर दायित्वों को ईमानदारी पूर्वक नहीं निभा पा रहे हैं। ऐसे संगठनों का न तो वर्चस्व ही होता है, और न दीर्घकालीन अस्तित्व। लकडी में दीमक की भाँति बाहर से संगठित, सुव्यवस्थित लगने के बावजूद पूर्ण रूपेण खोखले होते हैं। उनका आचरण समूह एवं एकांत में बहुरूपियों की भाँति मायावी होता है। जिस प्रकार बिना जड के पेड, नींव के बिना भवन का अस्तित्व संगिद्ध होता हैं, उसी प्रकार ऐसे धार्मिक संगठनों को संगठित समझना बहुत बडा धोखा होता है। जहाँ मन भेद हों, विचार भेद हों, आचार भेद हों, वे संगठन के खोखले रूप ही होते हैं एवं अपनी कमजोरियों पर आवरण डालने हेतु संगठन का ढोल पिटते हैं एवं अपनी कमजोरियों को छिपाने में संगठन का लाभ उठाते हैं। इसके विपरीत सम्प्रदायों में प्रायः अनुशासन एवं नियंत्रण सुव्यवस्थित होता है। साधना हेतु आचार्यों की प्रभावी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन नियमित मिलता रहता है। विचारों में समानता होने से साधना हेतु इच्छित वातावरण एवं सहयोग मिलता है।

परन्तु यदि सम्प्रदाय का आचार्य अथवा संचालक विवेकशील, व्यवहार कुशल, चिंतक एवं अप्रमादी न हुआ तो साधना का पवित्र क्षेत्र साम्प्रदायिक महत्वकांक्षाओं अथवा अहम् पोषण का केन्द्र बन द्वेष, निन्दा ईर्ष्या जैसे दुर्गुणों का अखाडा बन जाता है। वहाँ साधना गौण परन्तु व्यक्तिगत हित सर्वोपरि हो जाते हैं। आचार्य के कार्यकलापों के विरूध्द साधक सोच भी नहीं सकता। साधक को तो जो आचार्य के निर्दशों एवं संघ की मर्यादाओं का आंख मूंद कर पालन करना पडता है अन्यथा उन्हें सम्प्रदाय से निष्कासित कर दिया जाता है। सम्प्रदाय में कभी कभी गुरू को भगवान से ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। तीर्थंकरों के गुणगान हों अथवा नहीं मगर गुरू के गुणगान अवश्य होते हैं। कहीं-कहीं तो कट्टरता के नाम पर महावीर की सन्तान कहलाते, भक्तों को लज्जा का अनुभव होता है। परन्तु सम्प्रदाय विशेष के वंशज कहलाने में गौरव का अनुभव करते हैं। जो कदापि उचित नहीं कहा जा सकता। शाखाओं से समग्र पेड का महत्त्व अधिक होता है। साम्प्रदायिक मनोवृत्ति वालों को इस पर चिंतन करना होगा?

वर्तमान में सम्प्रदायों का दृष्टिकोण :

सम्प्रदायों में भी चर्चा हम अनेकांतवाद की करते हैं परन्तु आचरण एकांतवाद का, उपदेश प्राणी मात्र के कल्याण का देते हैं परन्तु दृष्टिकोण में साम्प्रदायिक हितों से उपर सोच भी नहीं सकते। सभी इस बात को स्वीकार करते हैं कि गणधर गौतम को भगवान महावीर के प्रति अनुराग होने से केवल ज्ञान की प्राप्ति में विलंब हुआ फिर भी साधना के नाम पर साम्प्रदायिक राग को संजोए हुये हैं। जो चिंतन का विषय है? सम्प्रदाय में दृष्टिकोण संकुचित एवं सीमित हो जाता है। परिवार की भाँति अपने अनुयायियों के प्रति अपनत्व बढ जाता है। एक परिवार से संबंध तोड साधक सैकडों परिवारों से जुड जाता है। अपने श्रध्दालुओं एवं अन्य भक्तों के प्रति उनके व्यवहार में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। कभी कभी साम्प्रदायिक मर्यादाओं की आड में साधारण लोक व्यवहारों की भी खुले रूप में उपेक्षा करते संकोच नहीं होता.

सामान्य लोक व्यवहार एवं विवेक पालन करने में हमारी सामाचारी बाधक बन रही हैं एवं साधना खंडित होती नजर आती है। आज हमने जड क्रियाओं को मूल सिद्धान्तों से अधिक महत्त्व दे दिया है। इसी कारण जिन सम्प्रदायों में आपसी व्यवहार नहीं होता, यदि मार्ग में आमने सामने मिल जाएं जो असमंजस की स्थिती बन जाती है। सामान्य लोकव्यवहार के पालन भी कहीं-कहीं पर नहीं होता हैं। सद्विवेक गौण हो जाता है । अन्य सम्प्रदायों के साथ उठना-बैठना, व्याख्यान देना वर्जित हो रहा है, एवं उसकी उपेक्षा करने वालों को प्रायश्चित दिया जाता हैं एवं कभी-कभी तो संघ से निष्कासित तक कर दिया जाता है। दूसरी तरफ उससे भी अधिक आवश्यक मूल सिध्दातों के प्रतिकूल आचरण करनेवाले मायावी राजनेताओं, प्रशासनिक पदाधिकारियों अनैतिक भक्तों तथा राग एवं द्वेष बढानेवाले कुकृत्यों का खुले रूप में आदर-सत्कार किया जाता है। हमारी दृष्टि मूल से हटती जा रही है। अपने दुर्गुण एवं दूसरों की अच्छाइयाँ हम नहीं देख पा रहे हैं। प्रसन्नचंद राजर्षि भावना का प्रवाह बदलते ही अधोगति की स्थिती को समाप्त कर कैसे केवल ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं? द्रव्य साधना को ही सब कुछ माननें वालों को इस प्रसंग का चिंतन करना चाहिए।

बहुत से सम्प्रदायों को जहाँ अपने ज्ञान तथा आचरण पर गर्व है तो अन्य सम्प्रदायों के शिथिलाचार के प्रति घृणा चंद सम्प्रदायों को अपने सकुशल एवं सुव्यस्थित नेतृत्व पर गर्व होता है और सस्ती लोकप्रियता ही साधना का लक्ष्य समझने की भूल कर रहे हैं। कुछ अपने बढते परिवार को सफलता का मापदंड समझ रहे हैं एवं उनका मात्र उद्देश्य उचित अथवा अनुचित प्रेरणा अथवा लालच देकर अपने अनुयायियों एवं भक्तों की

संख्या बढाना। साधना का मापदंड आध्यात्मिकता के मूल सिद्धातों से हटकर अनुयायियों/भक्तों की संख्या पर केंद्रित होता जा रहा है। कुछ साधक अपना प्रभाव बतलाने के लिए बडी-बडी सामाजिक योजनाएँ एवं भव्य आयोजन कर अधिक से अधिक भीड जुटाने में अपनी साधना को सफल मानते हैं।

बहुत से व्यक्ति संगठन के नाम पर शिथिलाचार की उपेक्षा करते हैं उनका दृष्टिकोण होता है कि ''कलयुग में सतयुग की कल्पना कैसी''? जैसे मिले अन्न, वैसा होवे मन । साधक वर्ग हमसे तो बहुत ही अच्छा है एवं हमें उनके दुर्गुणों की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए। साधु के व्रत मोती के समान अखंडित होते हैं और श्रावक के व्रत स्वर्ण के समान आंशिक भी हो सकते हैं, क्योंकि साधु पापों का समग्र रूप से त्यागी होता है। अतः वहाँ शिथिलाचार को तनिक भी स्थान नहीं होता।

सिध्दांतो का पालन आवश्यक :

भारतीय संस्कृति की परंपरा रही है कि जो भी संकल्प किया जाता है उसको प्राणों का उपसर्ग होने पर भी निभाया जाता है। सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र ने सत्य के लिए अपना सर्वस्व क्यों त्यागा? रानी पद्मिनी ने सैकडों दासियों के साथ आग में कुदकर सतीत्व की रक्षा के लिए क्यों जौहर किया? इतिहास ऐसे हजारों घटनाओं से भरा पडा हैं, कि जब कभी प्रण में एक को बचाने का प्रसंग आया तो प्रण की रक्षा को ही महत्त्व दिया गया। इसी कारण आज हमारी संस्कृति अभी तक जीवित है। मेतार्य मुनि, धर्म रूचि अणगार, गजसुकुमाल मुनि, खन्दक मुनि, अम्बड संन्यासी के ७०० शिष्य, स्कन्धक आचार्य के ५०० शिष्य घाणी में पीलने जैसे मारणांतिक उपसर्ग आने के बाद में भी अपने संकल्प से विचलित क्यों नहीं हुए? शिथिलाचार को प्रोत्साहन देने वालों के लिए यह ऐतिहासिक प्रसंग प्रकाश स्तम्भ के समान प्रेरणा का कार्य कर सकते हैं। साधारण सी प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने संकल्पों को तोडनेवाले साधक इस बात पर सदचिंतन कर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रति सजग बनेंगे।

साधना में बाधक मर्यादाएँ अनावश्यक :

अन्त में हमें स्वीकारना होगा यदि सम्प्रदायों की स्थापना मूल सिध्दांतो की रक्षा, आध्यात्मिक मूल्यों की सुरक्षा, शिथिलाचार को हतोत्साहित करने के लिए तथा साधना के अमुल्य लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए होती हैं, तब तो उचित हैं परन्तु जिन सम्प्रदायों का गठन निजी महत्वाकांक्षाओं की पुष्टी के लिए, अपने श्रध्दालुओं के बल पर होता है, वहाँ राग-द्वेष, विषय कषाय को निश्चित प्रोत्साहन मिलता है। ऐसे सम्प्रदायों में व्यक्तिगत तथा साम्प्रदायिक हित प्रमुख एवं साधना गौण हो जाती है। जब साधना ही गौण होगी तब साधक अपने लक्ष्य को कैसे प्राप्त करेंगे। वे दूसरों का भला कर पायें या नहीं स्वयं के प्रति ईमानदार नहीं हो सकते। अतः जो सम्प्रदायें आध्यात्मिक नियंत्रण रख साधना के पथ को सुव्यवस्थित करने में सक्षम होती हैं, वे ही उपयोगी होती हैं। चिंतनशील साधक ही स्वविवेक द्वारा द्रव्य, क्षेत्र काल एवं भावना के आधार पर सद्विवेक द्वारा साम्प्रदायिक मर्यादाओं की उपयोगिता का निर्णय ले सकते हैं तथा जो साम्प्रदायिक मर्यादायें साधना में बाधक अथवा मूल भावना के प्रतिकूल होती हैं उन्हें त्यागने की पहल कर सकते हैं, परन्तु साम्प्रदायिक मर्यादाओं की आड में सामान्य लोक व्यवहारों की उपेक्षा भी उचित नहीं कही जा सकती। हमारा आचरण एवं व्यवहार समाज में सद्भाव, प्रेम संगठन का प्रतीक बन मूल सिध्दान्तों का पोषक बनने वाला होना चाहिये, न कि मात्र साम्प्रदायिक मर्यादाओं का पोषक। साधना की प्राथमिकता होती है-आत्म-कल्याण। उसके लिए आवश्यक है कषायों की मंदता, अप्रमाद, प्रतिकूलताओं में समभाव। राग-द्वेष बढाने वाली वृत्तियों से विराम । जो सम्प्रदायें इन मापदण्डों का प्राथमिकता से पूर्णतया पालन करती हैं, वे सम्प्रदाय में रहते हुए भी संगठन को मजबूत बनाने में सहयोग दे सकती हैं। ●